अखिलेश यादव
akhileshyadav.edu@gmail.com

उच्च माध्यमिक स्तर पर दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति अध्यापकों की अभिवृत्ति का अध्ययन

(सागर नगर के सन्दर्भ में)

सार

इस शोध पत्र में शोध विषय 'उच्च माध्यमिक स्तर पर दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति अध्यापकों की अभिवृत्ति का अध्ययन (सागर नगर के संदर्भ में)' पर किया गया है। शोध में जीवसंख्या 32 उच्च माध्यमिक स्तर के 316 शिक्षक एवं शिक्षिकाए हैं, जिनमें से प्रतिदर्श के रूप में 20 उच्च माध्यमिक विद्यालय के 100 शिक्षकों एवं शिक्षिकाओ का चयन किया गया। प्रतिदर्श का चयन सरल यादृच्छिक प्रतिदर्शन के अंतर्गत लाटरी विधि का उपयोग कर किया गया हैं। आकड़े के संग्रहण हेतु स्वनिर्मित अध्यापक अभिवृत्ति मापनी (प्रश्नावली) का उपयोग किया गया है। शोध में शोधाथी द्वारा सांख्यिकी विश्लेषण के रूप में मध्यमान, मानक-विचलन, काई परीक्षण एवं टी- मापनी सांख्यिकी प्रविधियो का प्रयोग किया गया है। आकड़ा विशलेषण के पश्चात् प्राप्त परिणाम को इंगित करते है कि शासकीय विद्यालय के महिला शिक्षिकाओं में 78 प्रतिशत (19 शिक्षिकाओं) महिला शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति सकारात्मक एवं 22 प्रतिशत (6 शिक्षिकाओं) महिला शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति नकारात्मक प्राप्त हुई। शासकीय विद्यालय के पुरूष शिक्षकों में 71 प्रतिशत (18 शिक्षकों) शिक्षकों की अभिवृत्ति सकारात्मक एवं 29 प्रतिशत (7 शिक्षकों) शिक्षकों की अभिवृत्ति नकारात्मक प्राप्त हुई। अशासकीय विद्यालय के महिला शिक्षिकाओं में 49 प्रतिशत (12 शिक्षिकाओं) महिला शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति सकारात्मक एवं 51 प्रतिशत (13 शिक्षिकाओं) महिला शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति नकारात्मक प्राप्त हुई। अशासकीय विद्यालय के पुरूष शिक्षकों में 45 प्रतिशत (11 शिक्षकों) शिक्षकों की अभिवृत्ति सकारात्मक एवं 55 प्रतिशत (14 शिक्षकों) शिक्षकों की अभिवृत्ति नकारात्मक प्राप्त हुई। सागर नगर के उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति दिव्यांग विद्यार्थियों के प्रति सामान्य है साथ ही पुरुष शिक्षकों की तुलना में महिला शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति सकारात्मक प्राप्त हुई।

भूमिका

किसी भी समाज की उन्नति में शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करती है। भारत जैसे लोकतंत्रीय देश में शिक्षा की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है जैसा कि इमाइल दुर्खिम ने कहा है कि 'शिक्षा वह साधन है जिसके द्वारा समाज बच्चों में अपने अस्तित्व की अनिवार्य अवस्था को तैयार करता है' शिक्षा और समाज एक दुसरे से इस प्रकार सम्बन्धित है कि कहा जायेगा कि ये दोनों एक सिक्के के दो पहलू है। यह एक सर्वविदित सत्य है कि शिक्षा किसी भी व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के विकास की धुरी होती है। शिक्षा का संबंध सिर्फ साक्षरता से ही नहीं है, बल्कि शिक्षा चेतना और उत्तरदायित्व की भावना को जाग्रत करने वाला औजार भी है। शिक्षा को एक मापक

या पैमाने के तौर पर देखा जाता है, जिसके आधार पर व्यक्ति, राज्य या देश का मूल्यांकन किया जाता है।

शिक्षा आज विश्व में अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया जब से मानव ने समाज में रहना आरंभ किया है, तभी से अब तक चलती आ रही है। वर्तमान समय में शिक्षा इन तीन अर्थों में समझी जाती है, अतः शिक्षा का अर्थ है-विद्यार्थी की छिपी हुई शक्तियों का विकास करना, उसे ज्ञान या प्रशिक्षण देना, उसके ज्ञान और नैतिकता को इस प्रकार विकसित करना जिससे कि वह अपने पर्यावरण और समाज में समायोजन कर सकें और मानव जीवन की सभी संभावनाओं को प्राप्त कर सकें।

अध्यापक के महत्व के सम्बन्ध में डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कहा है, कि "अध्यापक का समाज में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है, वह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को बौद्धिक संस्कृतियों और तकनीकी कौशलो को पहुचाने में मुख्य भूमिका अदा करता है, और सभ्यता के दीपक को जलाये रखता है"।

अध्यापक शब्द बच्चे के जीवन में बहुत अधिक महत्व रखता है, अध्यापन पेशा या व्यवसाय नहीं बल्कि समाज के प्रति सेवा के लिये समर्पण है, एक शिक्षक ही देश को स्वावलम्बी बनाकर बुलंदी पर पहुचता है। अध्यापक ही अपने विद्यार्थियों में चरित्र निर्माण, व्यवहार आदि में परिवर्तन करके व्यक्तित्व का निर्माण करता है। विद्यार्थी को सही मार्गदर्शन अध्यापक द्वारा ही सम्भव है, शिक्षा की व्यवस्था की सफलता अध्यापक पर निर्भर करती है, एक अच्छा शिक्षक ही अच्छे समाज का निर्माण करता है।

आज के समाज में दिव्यांगो की शिक्षा महत्वपूर्ण है, क्योंकि दिव्यांगता को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अभिशाप मानना, सहानुभूति-दया आदि की भावना से ग्रसित होकर उनका सर्वांगीण विकास के प्रयास करना उचित नहीं है, जब तक कि इनके बीच कार्य करने वाले व्यक्तियों, अध्यापकों एवं संचालित कार्यक्रमों का विकास इनके प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखकर न किया जाए इसमें सफलता मिलना मुश्किल है। शिक्षक समाज के सजग प्रहरी, मार्गदर्शक एवं प्रकाश पुंज के रूप में कार्य करता है, इसलिए शिक्षक की भूमिका दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा में अत्यन्त महत्वपूर्ण हो जाती है। जैसा कि एन.सी. एफ. 2005 में बतलाया गया है कि समावेशन की नीति को हर स्कूल और सारी शिक्षा व्यवस्था में व्यापक रूप से लागू किए जाने की ज़रूरत है। बच्चे के जीवन के हर क्षेत्र में वह चाहे स्कूल में हो या बाहर, सभी बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित किए जाने की ज़रूरत है। स्कूलों को ऐसे केंद्र बनाए जाने की आवश्यकता है जहाँ बच्चों को जीवन की तैयारी कराई जाए और यह सुनिश्चित किया जाए कि सभी बच्चों, खासकर शारीरिक या मानसिक रूप से असमर्थ बच्चों, समाज के हाशिए पर जीने वाले बच्चों और कठिन परिस्थितियों में जीने वाले बच्चों को शिक्षा के इस महत्वपूर्ण क्षेत्र के सबसे ज्यादा फायदे मिलें।

सम्पूर्ण भारत में दिव्यंगो की जनसंख्या जनगणना 2011 के आधार पर 2.68 करोड़ है जो सम्पूर्ण जनसंख्या 121 करोड़ में 2.21 प्रतिशत है जिनमें दृष्टि बाधित-19 प्रतिशत, श्रवण ह्रास-19 प्रतिशत, वाक् बाधित-7 प्रतिशत, क्रिया-आधारित दिव्यांग 20 प्रतिशत, मानसिक मंद-6 प्रतिशत, मानसिक बीमार-3 प्रतिशत, बहु दिव्यांग-18 प्रतिशत तथा अन्य प्रकार के दिव्यांग की जनसख्या 18 प्रतिशत है जिसमें से ग्रामीण क्षेत्रो में 69 प्रतिशत तथा शहरी क्षेत्रो में 31 प्रतिशत दिव्यांग निवास करते है।

दिव्यांगता की परिभाषा:- (जनगणना 2011 के अनुसार) शारीरिक दिव्यांगता से अभिप्राय वह दिव्यांगता है जो कि शारीरिक रूप से हो अर्थात कोई व्यक्ति देखने, बोलने, सुनने या चलने में कठिनाई का सामना करता हो। शारीरिक दिव्यांगता को हम चार भागो में बाँटेगे।

1. दृष्टि दिव्यांगता, **2.** वाणी दिव्यांगता, **3.** श्रवण दिव्यांगता, **4.** चलन क्रिया दिव्यांगता।

दिव्यंगो की साक्षरता स्थिति भारत की साक्षरता दर 73 प्रतिशत के सापेक्ष में मात्र 55 प्रतिशत (1.46 करोड़) है जिसमे सें 62 प्रतिशत पुरुष साक्षरता दर एवं 45 प्रतिशत महिला साक्षरता दर राष्ट्रीय साक्षरता दर के अनुपात में निम्नतम स्थिति है जो इनकी दयनीय शैक्षिक स्थिति को इंगित करता है। स्कूल तक पहुच की बात करे तो 5 से 19 वर्ष के सम्पूर्ण दिव्यंगो में सें मात्र 57 प्रतिशत

बालकों एवं 47 प्रतिशत बालिकाओं तक हो पाई है। सम्पूर्ण दिव्यांग जनसँख्या 2.68 करोड़ में सें 11 प्रतिशत प्राथमिक से नीचे शिक्षा प्राप्त, 12 प्रतिशत प्राथमिक तक शिक्षा प्राप्त, 9 प्रतिशत माध्यमिक तक शिक्षा प्राप्त तथा मात्र 3 प्रतिशत दिव्यांगो की स्नातक शिक्षा तक पंहुच है (जन गणना 2011 के अनुसार), ये आकड़े हमें ये इंगित करते हैं कि यह समाज आज भी शैक्षिक रूप से मुख्य समाज से काफी पिछड़ा हुआ है।

एक सामान्य विद्यार्थी को पढ़ाने हेतु प्रशिक्षित अध्यापक शारीरिक दिव्यांग विद्यार्थियों को शिक्षित करने की विशेष कला से अवगत होता है। वह ऊपरी रूप से शारीरिक दिव्यांगों की सेवा कर सकता है और शिक्षा दे सकता है। शारीरिक दिव्यांग विद्यार्थियों को ऐसे अध्यापकों की आवश्यकता है जो उनकी मनोस्थिति को समझते हुए किसी ठोस दर्शन के आधार पर न केवल इनको शिक्षित करे बल्कि इनके सामाजिक, संवेगात्मक और शारीरिक विकास की ओर भी ध्यान दें, क्योंकि अध्यापक का अनुचित व्यवहार उनके मन में, कुंठा की भावना को जन्म देने का कार्य करेगा, जबकि अध्यापक का उचित व्यवहार इस प्रकार के विद्यार्थियों को अभिप्रेरित करने का कार्य करेगा।

दिव्यांग बच्चों की शिक्षा में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है, क्योकि समावेशी शिक्षा की कक्षा प्रक्रिया में शिक्षक के दृष्टिकोण (अभिवृत्ति) एवं व्यवहार महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते है। राम (2014) ने अपने शोध कार्य में पाया कि शिक्षको का दिव्यांग विद्यार्थियों से प्रश्न न पूछना एवं उनके गृह कार्य की जाँच को अन्य विद्यार्थियों के समान न करना, इस प्रकार का व्यवहार इन बच्चों को बहिष्करण की तरफ धकेलता है। इस प्रकार का शिक्षको का दृष्टिकोण एवं व्यवहार समावेशी शिक्षा के गठन एवं सफल संचालन में कठिनाई उत्पन्न करता हैं, सामान्यतः शिक्षक का दृष्टि कोण एवं व्यवहार दिव्यांग विद्यार्थियों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण होता है, जिससे शिक्षक इस प्रकार के विद्यार्थियों को अन्यों से कमजोर समझता है या कहें सीखने लायक नहीं समझता है जिससे ये बच्चे कक्षा में होतें हुए भी अपने को कक्षा से अलग पाते हैं। ज्यादातर शिक्षक दिव्यांग एवं अन्य इस प्रकार के विद्यार्थियों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण अपनाते है। फिर भी सामान्य दृष्टि से देखा जाये तो आज भी दिव्यांगों की उपेक्षा हो रही है। दिव्यांग शारीरिक दृष्टि से भले ही कमजोर होते हैं, लेकिन उनका मस्तिष्क सामान्य व्यक्ति की तरह परिपक्व होता है। इसी कारण अस्थिबाधित दिव्यांगों को सामाजिक आर्थिक समस्या एवं पुनर्वास का अध्ययन कर उनके लिए चलाई जा रही योजनाओं एवं कार्यक्रमों के माध्यम से समाज की मुख्य धारा से जोड़ने का प्रयास किया जाये । जिससे वे अपना जीवन सामान्य व्यक्ति की तरह व्यतीत कर सकें।

शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

शोध विषय की आवश्यकता इस लिए भी हैं कि जैसा कि युनेस्को (2009.) ने अपने प्रतिवेदन में बतलाया कि दिव्यांग विद्यार्थियो की शिक्षा में शिक्षको की अभिवृत्ति एक प्रमुख बाधक हैं, दास (2010) ने अपने शोध में बतलाया कि दिव्यांग विद्यार्थियो का सामान्य कक्षा में शिक्षण हेतु शिक्षको की अभिवृत्ति प्रमुख बाधक है साथ ही ज्यादातर शिक्षक इन विद्यार्थियो को कक्षा में सम्मिलित करने के पक्ष में नहीं हैं। जैसा कि कलाम (2014) ने अपने शोध में बतलाया कि शिक्षकों को सहानुभूति के बजाय समानुभूति का दृष्टिकोण अपनाना चाहिए जिससे इस प्रकार के विद्यार्थी अपने आप को कक्षा में अन्य विद्यार्थियों से भिन्न नहीं समझेगें। समानुभूति पूर्ण दृष्टिकोण दिव्यांगो कों अन्य विद्यार्थीयो के समान मजबूत बनाने में सहायक होता हैं।

शोध विषय की आवश्यकता इस लिए भी हैं कि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी किशोरा अवस्था में होते हैं जो कि जीवन का सबसे महत्वपूर्ण समय होता हैं इस स्तर पर शिक्षक कार्य केवल शिक्षण तक सीमित नहीं होता है अपितु मार्गदर्शक की भूमिका का निर्वाहन करना होता हैं। उम्र के इस पड़ाव में विद्यार्थियों को व्यवसायिक एवं सामाजिक निर्देशन की आवश्यकता होती हैं, क्योंकि वे अपने जीवन काल के सबसे कठिन दौर से गुजर रहे होते हैं। जहां अध्यापको की भूमिका और भी ज्यादा बढ़ जाती हैं क्योंकि अध्यापक ही वह साधन है जो बच्चों को सही

व्यवसायिक एवं सामाजिक निर्देशन प्रदान करके उनके जीवन को सही दिशा प्रदान कर सकता हैं।

यह अध्यन इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि दिव्यांगो को सिखाने और भागीदारी में बाधा के रूप में एक अध्यापक का व्यवहार एवं उसकी अभिवृति महत्वपूर्ण होती है। एन.सी.ई.आर.टी.(2009) ने अपनी रिर्पोट में बतलाया कि प्रकृति मानव जीवन का आधार होती है हमारी प्रवृति हमारे विचारों, भावनाओ और जो भी हम करते है, को स्पष्ट रूप से प्रभावित कराती है। वे वास्तव में हमारे सोचने, महसूस करने और कार्य करने को निर्धारित करती है, प्रवृति वास्तव में किसी कार्य को करने के प्रति तत्परता है, परन्तु ये अत्यधिक भावनात्मक होती है, क्योकि ये हम जिस प्रकार लोगों एवं चीजो का मूल्यांकन करते है। उसको प्रतिबिम्बित करती है, ये हमें यह फैसला करने में मार्गदर्शन करती है, कि हम किसको पसंद या नापसंद करें, किससे बचें और किसे अपनाये। सबसे बड़ी बाध्ाा अध्यापक का रवैया होता है, अगर अध्यापक विशिष्ट आवश्यकता वाले बालक के प्रति नकारात्मक और पक्षपातपूर्ण रवैया रखता है, या ऐसे बालको की शिक्षा के प्रति उसकी नकारात्मक पहुंच होती है तो समावेशन सफल नहीं हो सकता है, अध्यापको का व्यवहार भी शिक्षिक कार्यक्रमो, कार्यशालाओ और इस क्षेत्र में अन्य लोगों का अनुभव जानकर बदल जाता है।

शोधार्थी द्वारा इस अध्ययन से यह पता लगाने का प्रयास किया गया है, कि शिक्षकों की अभिवृति दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा पर किस प्रकार प्रभाव डालती है, सामान्य एवं अस्थि दिव्यांग विद्यार्थियों के समायोजन में विद्यालय की अहम भूमिका रहती है। इसी प्रकार शिक्षक विद्यार्थियों के लिए एक आन्तरिक प्रेरणा का कार्य करते हैं चूँकि समायोजन एक अर्जित कारक है, इसीलिए यह सदैव सभी के लिए एक समान नहीं रहता है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति भिन्न है इसीलिए उसका समायोजन भी अलग-अलग होगा। यदि दिव्यांगता बच्चे को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है, तो उसके व्यवहार एवं विकास में नकारात्मकता का प्रभाव मिलता है। शिक्षकों की अभिवृति में जिम्मेदार उन कारणों का पता लगाकर, जो उनकी शिक्षा एवं अभिप्रेरणा में बाधा उत्पनन कर रहे है उन्हें दूर किया जा सकता है।

अनुसंधान के उद्देश्य:

- उच्च माध्यमिक स्तर के अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।
- उच्च माध्यमिक स्तर के अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पनाएँ

- सागर नगर के उच्च माध्यमिक स्तर के शासकीय विद्यालय के अध्यापको की शारीरिक दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति अभिवृति सामान्य है।
- सागर नगर के उच्च माध्यमिक स्तर के अशासकीय विद्यालय के अध्यापकों की शारीरिक दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति अभिवृति सामान्य है।
- सागर नगर के उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर के महिला अध्यापकों की शारिरीक दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति सामान्य है।
- सागर नगर के उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर के पुरूष अध्यापकों की शारीरिक दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति सामान्य है।
- सागर नगर के उच्च माध्यमिक स्तर के अशासकीय एवं शासकीय विद्यालय के अध्यापकों की शारीरिक दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति अभिवृति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- सागर नगर के उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर के महिला एवं पुरूष अध्यापकों की शारिरीक दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- सागर नगर के उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर के शासकीय पुरूष एवं अशासकीय पुरूष अध्यापकों का शारीरिक दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

- सागर नगर के उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर के शासकीय महिला एवं अशासकीय महिला अध्यापकों की शारीरिक दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण:

एडिन, हरदीप और मैक कार्टिय (2014) ने विषय "दिव्यांग लोगों के प्रति वर्तमान अभिवृति" पर रिपोर्ट प्रस्तुत किया, जिसमे इन्होंने पाया कि ब्रिटिश लोगों में 53 प्रतिशत ने बताया कि वे दिव्यांग लोगों के साथ रहने एवं काम करने में असुविधा महसूस करते है, और 47 प्रतिशत लोगों ने बताया की इनके साथ रहने में असुविधा होती है परन्तु इनके साथ काम करने में असुविधा नहीं होती है। मार्टिन,एल जान्ड्रो एवं एमिलिया आल्बेरेजर्रेगुई, (2013) ने ''दिव्यागता के प्रति अभिवृति की पहचान करने के एक पैमाने का विकास एवं सत्यापन उच्च शिक्षा के संदर्भ में'' विषय पर किया परिणाम में यह पाया कि शिक्षको एवं विद्यार्थियों की अभिवृति दिव्यांगता के प्रति सामान्य है, साथ ही पाया कि प्रत्येक मानस मिति सम्बन्धी (सैकोमिर्टिक) गुणवत्ता का प्रमाण प्रदान करते है। ग्राम्स, मौली एवं कार्टन लेवर्टज (2010) ने विषय "लोगों की दिव्यंगता के प्रति अभिवृति का अध्ययन चीन एवं अमेरिकन छात्रो का तुलनात्मक रूप में" पर शोध किया, परिणामतः पाया कि सामाजिक दृष्टी कोण दिव्यांगजनो के प्रति नकारात्मक है, साथ ही अमेरिकी छात्रो की चीनी छात्रो की तुलना में दिव्यंगो के प्रति अभिवृति सकारात्मक प्राप्त हुई। फिल्डलर, लाइरा (2007) ने "दिव्यांग जन के प्रति बहुआयामी अभिवृति का मापन" विषय पर शोध किया। क्रहे,बरबरा एवं कोलेट आल्ववेस्टर, (2006) ने "शारीरिक दिव्यांग लोगों के प्रति नकरात्मक अभिवृति को बदलना. एक प्रायोगिक अध्ययन" विषय पर शोध किया।

शोध अभिकल्प

शोध विधि: प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

जनसंख्या: शोध में जीवसंख्या के रूप में चयनित 32 उच्च माध्यमिक स्तर के 316 अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं में से प्रतिदर्श के रूप में 20 उच्च माध्यमिक स्तर के 100 अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं का चयन किया गया है।

प्रतिदर्श: प्रस्तुत शोध में प्रतिदर्श चयन की विधि के रूप में सरल यादृच्छिक प्रतिदर्शन के अंतर्गत लाटरी विधि का उपयोग कर प्रतिदर्श चयन किया गया है। क्योकि यहाँ जीवसंख्या सीमित है, इसलिए प्रतिचयन विधि के रूप में लाटरी विधि का उपयोग किया गया है, साथ ही प्रत्येक प्रतिदर्श के रूप में चयनित विद्यालय के अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं का चयन उनकी वरिष्ठता (वरिष्ठ, कम वरिष्ठ) क्रम के आधार पर किया गया है।

शोध उपकरण: प्रस्तुत शोध समस्या के अध्ययन हेतु शोधार्थी द्वारा मापन उपकरण के रूप में ''स्वनिर्मित प्रश्नावली'' का उपयोग किया गया है। जिसमे कुल प्रश्नों की संख्या 50 है। इन 50 प्रश्नों में 27 ऋणात्मक प्रश्न एवं 23 धनात्मक प्रश्न है। यह प्रश्नावली योग निर्धारण विधि (लिकर्ट विधि) के अनुसार निर्मित की गई है। यह विधि अभिवृति मापनी निर्माण के स्केल्ड प्रतिक्रिया विधि के अंतर्गत आती है। प्रश्नावली में प्रतिक्रिया देने के पाँच विकल्प यथा- पुर्णतः सहमत, कुछ सहमत, अनिश्चित, कुछ असहमत, पूर्णतः असहमत का उपयोग किया गया है। प्रस्तुत परीक्षण का विश्वसनीयता गुणांक अर्द्धविच्छेद विश्वसनीयता विधि में प्रथम अर्द्धांश-द्वितीय अर्द्धांश विधि के प्रयोग द्वारा ज्ञात किया गया है। उपर्युक्त परीक्षण का विश्वनीयता गुणांक 0.52 तथा वैधता गुणांक 0.631 प्राप्त हुआ है।

संख्यिकी विधि: शोध में शोधार्थी द्वारा सांख्यिकी विश्लेषण के रूप में सांख्यिकी प्रविधियो मध्यमान, मानक-विचलन, काई परिक्षण एवं टी-मापनी का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्त विश्लेषण एवं परिणामों की प्राप्ति: शोध में परिकल्पना परिक्षण हेतु शोधार्थी ने सार्थकता स्तर 0.01 एवं 0.05 का चयन किया हैं।

क्रम सं.	परिकल्पनायें	टी-परिक्षण मान या काई परिक्षण मान	सार्थकता स्तर
1	सागर नगर के उच्च माध्यमिक स्तर के शासकीय विद्यालय के अध्यापको की शारीरिक दिव्यांग छात्रो की शिक्षा के प्रति अभिवृति सामान्य है।	1-60#	0.05,स्तर पर असार्थक
2	सागर नगर के उच्च माध्यमिक स्तर के अशासकीय विद्यालय के अध्यापकों की शारीरिक दिव्यांग छात्रो की शिक्षा के प्रति अभिवृति सामान्य है।	6-00#	0-05, स्तर पर सार्थक
3	सागर नगर के उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर के महिला अध्यापकों की शारिरीक दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति सामान्य है।	2-33#	0-05, स्तर पर असार्थक
4	सागर नगर के उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर के पुरूष अध्यापकों की शारिरीक दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति सामान्य है।	10-20#	0-01, स्तर पर सार्थक
5	सागर नगर के उच्च माध्यमिक स्तर के अशासकीय एवं शासकीय विद्यालय के अध्यापकों की शारीरिक दिव्यांग छात्रो की शिक्षा के प्रति अभिवृति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।	0-25*	0-05, स्तर पर असार्थक
6-	सागर नगर के उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर के महिला एवं पुरूष अध्यापकों की शारिरीक दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।	1-15*	0-05, स्तर पर असार्थक
7	सागर नगर के उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर के शासकीय पुरूष एवं अशासकीय पुरूष अध्यापकों का शारिरीक दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।	1-42*	0-05, स्तर पर असार्थक
8	सागर नगर के उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर के शासकीय महिला एवं अशासकीय महिला अध्यापकों की शारिरीक दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।	0-33*	0-05, स्तर पर

काई परिक्षण मान, 'टी-परिक्षण मान

परिणामों की व्याख्या:

प्रस्तुत शोध से प्राप्त आकड़ों एवं उनके विश्लेषण के पश्चात् निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए है:-

1. सागर नगर के उच्च माध्यमिक स्तर के शासकीय विद्यालयों के अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति सामान्य प्राप्त हुई है। जिससें यह प्रदर्शित होता है, कि शासकीय उच्च माध्यमिक स्तर के अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की दिव्यांग विद्यार्थियों के प्रति अभिवृति सामान्य विद्यार्थियों के समान है।
2. सागर नगर के उच्च माध्यमिक स्तर के अशासकीय विद्यालयों के अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति सामान्य प्राप्त हुई है। जिससें यह प्रदर्शित होता है, कि शासकीय उच्च माध्यमिक स्तर के अध्यापकों

एवं अध्यापिकाओं की दिव्यांग विद्यार्थियों के प्रति अभिवृति सामान्य विद्यार्थियों के समान है।

3. सागर नगर के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के महिला अध्यापिकाओं की दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति सामान्य प्राप्त हुई है। जिससें यह प्रदर्शित होता है, कि उच्च माध्यमिक स्तर के महिला अध्यापिकाओं की दिव्यांग विद्यार्थियों के प्रति अभिवृति सामान्य विद्यार्थियों के समान ही है।
4. सागर नगर के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के पुरुष अध्यापकों की दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति सामान्य प्राप्त हुई है। जिससें यह प्रदर्शित होता है, कि उच्च माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की दिव्यांग विद्यार्थियों के प्रति अभिवृति सामान्य विद्यार्थियों के समान है, साथ ही अगर अध्यापक प्रशिक्षित हो तो लिंग का प्रभाव दिव्यांगों के प्रति अभिवृत्ति पर नहीं परिलक्षित होता है।
5. सागर नगर के उच्च माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय अध्यापकों और अध्यापिकाओं की अभिवृति के बीच कोई अंतर नहीं प्राप्त हुआ है। जिससे यह प्रदर्शित होता है, कि शिक्षक प्रशिक्षित हो तो विद्यालय शासकीय या अशासकीय होने से शिक्षकों की अभिवृत्ति में कोई अंतर नहीं होता है।
6. सागर नगर के उच्च माध्यमिक स्तर के पुरुष अध्यापकों और महिला अध्यापिकाओं की दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति अभिवृति के बीच कोई अंतर नहीं प्राप्त हुआ है। जिससे यह प्रदर्शित होता है, कि शिक्षक लिंग अलग अलग होने से शिक्षकों की अभिवृत्ति में कोई अंतर नहीं होता है।
7. सागर नगर के उच्च माध्यमिक स्तर के शासकीय पुरुष एवं अशासकीय पुरुष अध्यापकों की अभिवृति के बीच कोई अंतर नहीं प्राप्त हुआ है, जिससे यह प्रदर्शित होता है, कि एक ही तरह के लिंग होनें पर विद्यालयों के अलग अलग प्रकार होने से अध्यापकों की अभिवृत्ति में कोई अंतर नहीं होता है।
8. सागर नगर के उच्च माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय महिला अध्यापिकाओं की अभिवृति के बीच कोई अंतर नहीं प्राप्त हुआ है। जिससे यह प्रदर्शित होता है, कि एक ही तरह के लिंग होनें पर विद्यालयों के अलग अलग प्रकार होने से अध्यापिकाओं की अभिवृत्ति में कोई अंतर नहीं होता है।

मुख्य परिणामों की प्राति: शोध में आकड़े संग्रहण एवं विश्लेषण के पश्चात निम्नलिखित मुख्य परिणामों की प्राप्ति हुई हैं-

- शोध में परिणामतः पाया गया कि 17 प्रतिशत शिक्षकों के प्रतिक्रिया अंक 200 से अधिक प्राप्त हुए, 53 प्रतिशत शिक्षकों के प्रतिक्रिया अंक 150 एवं 200 के मध्य प्राप्त हुए, 30 प्रतिशत शिक्षकों के प्रतिक्रिया अंक 150 से कम प्राप्त हुए। अर्थात कि 17 प्रतिशत शिक्षकों की अभिवृत्ति उच्च अभिवृत्ति श्रेणी में, 53 प्रतिशत शिक्षकों की अभिवृत्ति सामान्य अभिवृत्ति श्रेणी में, 30 प्रतिशत शिक्षकों की अभिवृत्ति निम्न अभिवृत्ति श्रेणी में पाई गयी।
- शोध में परिणामतः पाया गया कि 68 प्रतिशत (68 शिक्षकों) शिक्षकों की अभिवृत्ति सकारात्मक एवं 32 प्रतिशत (32 शिक्षकों) शिक्षकों की अभिवृत्ति नकारात्मक प्राप्त हुई। जिनमें शासकीय विद्यालय के 70 प्रतिशत (35 शिक्षकों) शिक्षकों की अभिवृत्ति सकारात्मक एवं 30 प्रतिशत (15 शिक्षकों) शिक्षकों की अभिवृत्ति नकारात्मक प्राप्त हुई। अशासकीय विद्यालय के 32 प्रतिशत (16 शिक्षकों) शिक्षकों की अभिवृत्ति सकारात्मक एवं 68 प्रतिशत (34 शिक्षकों) शिक्षकों की अभिवृत्ति नकारात्मक प्राप्त हुई।
- शोध में परिणामतः पाया गया कि महिला शिक्षिकाओं में 75 प्रतिशत (38 शिक्षिकाओं) महिला शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति सकारात्मक एवं 25 प्रतिशत (12 शिक्षिकाओं) महिला शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति नकारात्मक प्राप्त हुई। पुरूष शिक्षकों में 42 प्रतिशत (21 शिक्षकों) शिक्षकों की अभिवृत्ति सकारात्मक एवं 58 प्रतिशत (29 शिक्षकों) शिक्षकों की अभिवृत्ति नकारात्मक प्राप्त हुई।

- शोध में परिणामतः पाया गया कि शासकीय विद्यालय के महिला शिक्षिकाओं में 78 प्रतिशत (19 शिक्षिकाओं) महिला शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति सकारात्मक एवं 22 प्रतिशत (6 शिक्षिकाओं) महिला शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति नकारात्मक प्राप्त हुई। शासकीय विद्यालय के पुरूष शिक्षकों में 71 प्रतिशत (18 शिक्षकों) शिक्षकों की अभिवृत्ति सकारात्मक एवं 29 प्रतिशत (7 शिक्षकों) शिक्षकों की अभिवृत्ति नकारात्मक प्राप्त हुई। अशासकीय विद्यालय के महिला शिक्षिकाओं में 49 प्रतिशत (12 शिक्षिकाओं) महिला शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति सकारात्मक एवं 51 प्रतिशत (13 शिक्षिकाओं) महिला शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति नकारात्मक प्राप्त हुई। अशासकीय विद्यालय के पुरूष शिक्षकों में 45 प्रतिशत (11 शिक्षकों) शिक्षकों की अभिवृत्ति सकारात्मक एवं 55 प्रतिशत (14 शिक्षकों) शिक्षकों की अभिवृत्ति नकारात्मक प्राप्त हुई।

परिणामों पर चर्चा: उपर्युक्त शोध परिणाम प्राप्त हुए है इससे सम्बंधित कुछ शोध का विवरण निम्नलिखित है, जैसे- एल. जानड्रो मार्टिन एवं एमिलिया आल्वेरेजर्रेगूइ (2013) ने अपने शोध परिणाम के रूप में बतलाया कि सामान्य विद्यालय के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की दिव्यांगता के प्रति अभिवृत्ति सामान्य होती है। साथ ही एबिला ओल्लायो (2007) ने अपने शोध परिणाम के द्वारा बतलाया कि महिलायों की अभिवृत्ति पुरुषों की तुलना में सकारात्मक होती है। जो मेरे द्वारा प्रस्तुत शोध में भी परिलक्षित हुआ है, जब हमने पुरुष अध्यापकों एवं महिला अध्यापिकाओं के मध्यमान ज्ञात किया तो महिला अध्यापिकाओं के मध्यमान पुरुष अध्यापकों के मध्यमान से अधिक प्राप्त हुए जो यह प्रदर्शित करते है, की महिला अध्यापिकाओं की अभिवृत्ति पुरुष अध्यापकों की अभिवृत्ति से अधिक है, और एवांगलेन कर्न (2006) ने अपने शोध परिणाम में बतलाया कि सामान्य कक्षा के शिक्षकों की अभिवृत्ति दिव्यांगों के प्रति सामान्य है। किन्तु उन्हें प्रशिक्षण की आवश्यकता है जिससे उनकी अभिवृत्ति में और परिवर्तन हो सके। इन शोधों से प्राप्त परिणाम मेरे द्वारा किये गए शोध से प्राप्त परिणाम कों प्रमाणित करते है।

शोध निष्कर्ष: प्रस्तुत शोध में परिणामों की प्राप्ति एवं परिणामों की व्याख्या के पश्चात् निष्कर्षतः यह कहा जायेगा कि विभिन्न उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर के अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की अभिवृत्ति दिव्यांगों की शिक्षा के प्रति सामान्य प्राप्त हुई है, किन्तु परिणामों की प्राप्ति के पश्चात् यह भी कहा जायेगा कि महिला अध्यापिकाओं की अभिवृत्ति पुरुष अध्यापकों की अभिवृत्ति से अधिक सकारात्मक प्राप्त हुई है। शासकीय अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की अभिवृत्ति अशासकीय अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की तुलना में अधिक सकारात्मक प्राप्त हुई है। साथ ही शासकीय पुरुष अध्यापकों की अभिवृत्ति अशासकीय अध्यापकों की अभिवृत्ति की तुलना में कम सकारात्मक प्राप्त हुई है। और शासकी विद्यालय स्तर की महिला अध्यापिकाओं की अभिवृत्ति अशासकीय विद्यालय स्तर की महिला अध्यापिकाओं से अधिक सकारात्मक प्राप्त हुई है। निष्कर्षतः सभी अध्यापको एवं अध्यापिकाओं की दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा के अभिवृत्ति में एकरूपता पायी गयी।

अंततः हम यही कहेगे कि शोध में प्रयोज्य के रूप में सम्मिलित सभी अध्यापको एवं अध्यापिकाओं की दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति सामान्य प्राप्त हुई है। जिससे निष्कर्ष रूप में हम यही कहेगे की सागर नगर में स्थित सभी उच्च माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की अभिवृत्ति दिव्यांग विद्यार्थियों के प्रति सामान्य है।

प्रस्तुत अनुसन्धान का शैक्षिक निहितार्थ: स्टीफन हाकिंग महोदय ने दिव्यांगो के संदर्भ में कहा है कि "दिव्यांग लोगों को कई बाधाओं का सामना करने के कारण व्यावहारिक शारीरिक और वित्तीय रूप कमजोर पड़ना पड़ता है इन बाधाओं को दूर करना हमारी पहुच के भीतर है और ऐसा करना हमारा नैतिक कर्तव्य है, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण इन अवरोधों को समाप्त करना होगा इन सरे लोगों की क्षमता को खोला जाए जिससे ये दुनिया में अपना योगदान दे सके प्रत्येक सरकारे लाखो करोड़ो लोग जो अक्षमता से ग्रसित है उनकी अनदेखी नहीं कर सकती है इस वंचित समाज को स्वास्थ्य पुनर्वास समर्थन शिक्षा

और रोजगार द्वारा कभी चमकाने का मौका नहीं मिला है" जब तक कि इनके बीच कार्य करने वाले व्यक्तियों, अध्यापकों एवं संचालित कार्यक्रमों का विकास इनके प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखकर न किया जाए। शिक्षक समाज के सजग प्रहरी, मार्गदर्शक एवं प्रकाश पुंज के रूप में कार्य करता है, इसलिए शिक्षक की भूमिका दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा में अत्यन्त महत्वपूर्ण हो जाती है। शिक्षक विद्यार्थियों के लिए एक आन्तरिक प्रेरणा का कार्य करते हैं चूँकि समायोजन एक अर्जित कारक है, इसीलिए यह सदैव सभी के लिए एक समान नहीं रहता है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति भिन्न है इसीलिए उसका समायोजन भी अलग-अलग होगा। यदि दिव्यांगता बालक को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है, तो उसके व्यवहार एवं विकास में नकारात्मकता का प्रभाव मिलता है।

कक्षा का वातावरण भेदभाव रहित सभी सीखने वाले के अनुकूल होना चाहिए जैसा एन.सी.एफ. 2005 में बतलाया गया हैं कि 'सावर्जनिक स्थल के रूप में स्कूल में समानता, सामाजिक विविधता और बहुलता के प्रति सम्मान का भाव होना चाहिए, साथ ही बच्चों के अधिकारों और उनकी गरिमा के प्रति सजगता का भाव होना चाहिए। इन मूल्यों को सजगतापूर्वक स्कूल के दृष्टिकोण का हिस्सा बनाया जाना चाहिए और उन्हें स्कूली व्यवहार की नींव बनना चाहिए। सीखने की क्षमता देने वाला वातावरण वह होता है जहाँ बच्चे सुरक्षित महसूस करते हैं, जहाँ भय का कोई स्थान नहीं होता और स्कूली रिश्तों में बराबरी और जगह में समता होती है।'

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

- एन.सी.ई.आर.टी. (2015), ''भारत में दिव्यांगों की शिक्षा एक हिस्तोरिकल बैक ग्राउन्ड '', नई दिल्ली, प्राप्ति स्रोत <http/:www.ncert.nic.in, 19.03.2016 और (http/:www.ncert.nic.in, 26.01.2017)
- एन.सी. ई. आर.टी (2015), भारत में दिव्यांगों की शिक्षा, ए हिस्तोरिकल बैक ग्राउन्ड, नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग एन.सी.आर.टी. प्राप्ति स्रोतः (http/:www.ncert.nic.in, 26.01.2017)
- कुमार कृष्ण (2013), राज समाज और शिक्षा, इलाहबाद, राजकमल प्रकाशन
- कुमार, पवन (2010).''सामान्य एंव दिव्यांग किशोर/किशोरियों के सांवेगिक परिपक्वता का अध्ययन'', लघु शोध प्रबन्ध, सागर, शिक्षा शास्त्र विभाग, डॉ हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश, पृष्ठ संख्या-18
- कुमारी, शारदा (2009), इक्ल्यूसिव विद्यालय वातावरण और कोमल की जरूरते-प्रथमिक शिक्षा, दिल्ली, एन.सी.ई.आर.टी, पृष्ठ संख्या. 22, 25
- दास, बी.एन.(2007). विशिष्ट बालकों के लिए शिक्षा, दिल्ली, अंजता प्रकाशन, पृष्ठ संख्या-123,228
- धर्मेन्द्र सिंह (2008), अस्थि बाधित विकलांगों की सामाजिक-आर्थिक समस्याएँ एवं पुनर्वासः एक समाज शास्त्रीय अध्ययन (खण्डवा जिले के विशेष संदर्भ में), वाणिज्य संकाय, इन्दौर, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय.
- पचैरी, आर.एस. (2014), ''दिव्यांगों की शिक्षा'', जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी पेज 45,189
- रंजन दीपक (2016), "विकलांगजनः शारीरिक पुनर्वास व संस्थागत प्रयास", लघु शोध प्रबन्ध, सागर, शिक्षा शास्त्र विभाग, डॉ हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश, पृष्ठ संख्या-54
- राव इंदु मती (2016), "विकलांग जन शैक्षिक अधिकार व अवसरों का उन्नयन", नई दिल्ली, योजना पत्रिका प्रकाशन विभाग भारत सरकार, पृष्ठ संख्या -9 12
- रंजन दीपक (2016) ,विकलांग जन शारीरिक पुनर्वास व संस्थागत प्रयास, नई दिल्ली, योजना पत्रिका प्रकाशन विभाग भारत सरकार, पृष्ठ संख्या-41 45

- राम, पी.एस. (1992), जूनियर हाईस्कूल कक्षाओं में अध्ययनरत अंध मूक-बधिर एवं सामान्य बालकों के समायोजन, व्यक्तित्व, स्वास्थ्य एवं समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, सागर, शिक्षा शास्त्र विभाग, डॉ. हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश, पृष्ठ संख्या-25
- लाल, मदन (2003), समाकेतिक शिक्षा, दिल्ली अजंता प्रकाशन, पृष्ठ संख्या- 46-68,180-236
- वाला, एम. (1985), ए कम्परेटिव स्टडी ऑफ द मेंटल मेक-अप एण्ड एजुकेशन फैसिलिटी फार फिजिकल हैडीकैप एण्ड नार्मल चिल्ड्रन, पी-एच.डी, एडु. कुर. यूनि. 1985, इन फोर्थ सर्वे आफ रिसर्च इन एजुकेशन, 1983-88, दिल्ली, एन.सी.ई.आर.टी., वाल्यूम-11,
- शर्मा, संदीन (2007), भारत में दिव्यांगों की शिक्षा की एक हिस्टोरिकल बैग्राउंड, रिसर्च एसोशिएट एजुकेशनल सर्वे एण्ड डाटा क्लैक्शन डिपार्टमेंट, नई दिल्ली, एन.सी.ई.आर.टी, पृष्ठ संख्या-18
- UNESCO (2009). टुवर्ड इनक्लुसिव एजूकेशन फार चिल्ड्रेन विथ डिसेविलिटी गाईड लाईन, बैंकाक।
- कलाम (2003). समावेशी शिक्षा और शिक्षक, खोजे और जानें, उदयपुर विद्या भवन सोसायटी अंक 7
- NCERT (2006). पोजीशन पेपर नेशनल फोकस ग्रुप ऑन एजुकेशन आफ चिल्ड्रेन विथ स्पेशल नीड्स।
- Olaya (2007). Attitude of Students towards peers with disability in an inclusive school in Nigeria. ile ife, DCIDJ, volume 23, pp65-75, retrieve from www.dcidj.org.
- Layera, Flinders (2007). The multidimensional attitudes scale towards person with disability (MAS). London.RCB, Vol-50, pp-166-176.
- Aiden, Hardeep and A. McCarthy. (2014). Current attitudes towards disabled people, Scope is a registered charity, number 208231. Copyright Scope May 2014, <http/:www.research-information.bristol.ac.uk/current-attitudes-towards-disabled-people,
- Elias Avramidis & B. Norwich. (2010). Teachers' attitudes towards integration / inclusion:a review of the literature, European Journal of Special Needs Education, ISSN: 0885-6257, <http://dx.doi.org/10.1080/08856250210129056,21.02.017
- Grames, Molly & C. Leverentz. (2010). Attitudes Toward Persons with Disabilities: A Comparison of Chinese and American Students. Journal of Undergraduate Research. <https://www.uwlax.edu/urc/jur-online/PDF/2010/grames-leverentz.pdf, 20.11.2016
- Hannon, Frances. (2006). Literature Review on Attitudes towards Disability, NDA, <https://www.ucd.ie/issda/static/documentation/nda/nda-literature-review.pdf,29.08.2016
- Kern, Evangeline. (2006), Survey of Teacher Attitude Regarding Inclusive Education Within an Urban School District, School Psychology Commons, <http://digitalcommons.pcom.edu/psychology_dissertations,16.06.2016
- Krahe, Barbara and C. Altwasser. (2006). Changing Negative Attitudes Towards Persons with Physical Disabilities: An Experimental Intervention, <http://onlinelibrary.wiley.com/,18.06.2016
- Ministry of Human Resourse Development. (2016).Educational Statistics At A Glunce.New Delhi.Government of India pp-1to56, <http//:www.mhrd.gov.in, 22.11.2016
- Martín, A. R. and Emilio Á. A. (2013). Development and validation of a scale to identify attitudes towards disability in Higher Education, ISSN: 0214–9915, <http://www.psicothema.com/, 28.09.2016
- Mani.M.N.J. (2000).Inclusive Education. koymbtour. Ramkrishna school <http://www.eng.vedanta.ru/library/prabuddha_bharata/September2005_Inclusive_Education.php.

- NCERT (2015), Including Children With Special Needs Upper Primary Stage, New Delhi National Council of Educational Research and Training. Offices of the Publication division, NCERT <http://www.ncert.nic.in/pdf_files/SpecialNeeds.pdf, 12.03.2017
- NCERT. (2014). Including Children With Special Needs Primary Stage, New Delhi National Council of Educational Research and Training. Offices of the Publication division,NCERT<http://www.ncert.nic.in/pdf_files/SpecialNeeds.pdf, 12.03.2017
- NUEPA.(2014).Education for All Toward Quality with Equity India. New Delhi. Government of India.MHRD. <http://mhrd.gov.in/nep-new, Pp-2to156
- Oppenheim, A.N.(1966). Questionnaire design, interviewing and attitude .measurement, London and New York, Pinter Publishers, <https://www.kth.se/social/.12.04.2017
- Popham, W.J. & R. R.Trimbli. (1960). The Minisota Teacher Attitude Inventry as an Index of General Teaching Competence. Educational and Psychological Measurement. Vol.20, No.3, 1960, <http://journals.sagepub.com/doi/abs/10.1177/001316446002000307
- Social statistics Division.(2016).Deseable person of India:At statical profile.New Delhi.GOV. India. <http://mospi.nic.in/ Pp-1to341
- Yee, Aleberth And B. Fruchter. (1971). Factor Content of the Minnesota Teacher Attitude Inventory, American Educatiorial Research Journal, <https://www.jstor.org/stable/1161741?seqpagescantabcontents,25.02.2017